एक नजर में

पटाखा व्यापारियों ने किया विधायक का सम्मान

उज्जैन। महाकाल खेरची पटाखा मार्केट में विधायक अनिल जैन कालूखेड़ा का साफा बांधकर, मिठाई खिलाकर सम्मान किया गया। सम्मान समारोह में कार्यक्रम का अध्यक्षता करते हुए महेंद्र कटियार ने व्यापारियों की विभिन्न समस्याओं से विधायक श्री कालूहेड़ा को अवगत कराया। संचालन प्रमोद वैश्य ने किया। इस दौरान हेमंत कश्यप, सत्यनारायण पोरवाल, गोविंद राव, प्रदीप सिसोदिया, जितेंद्र गुप्ता, सिसोदियाजी, सलीम खान, यूनुस भाई, सफी भाई आदि मौजूद रहे। शेरू भाई ने आभार व्यक्त किया।

21 अक्टूबर से तीन दिन होलसेल किराना बाजार बंद रहेगा

उज्जैन। उज्जैन की सबसे बडी व्यापारिक संस्था दौलतगंज होलसेल किराना मर्चेन्ट एसोसिएशन की साधारण सभा अध्यक्ष अजय रोहरा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस साधारण सभा में निर्णय लिया गया कि होलसेल किराना बाजार दीपावली बाद 21-22-23 अक्टूबर को पूर्ण रुप से बन्द रहेगा। 24 अक्टूबर शुक्रवार को प्रात: 10 बजे वरिष्ठ व्यापारी सम्मान समारोह होगा। इसके पश्चात किराना बाजार में मोहरत के सौदे होंगे। सचिव आशीष जैन ने बताया कि इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अनिल फिरोजिया सांसद, अनिल कालूहेड़ा विधायक, कलावती यादव अध्यक्ष, नगर निगम उज्जैन, मुकेश टटवाल महापौर, नगर निगम, उज्जैन विशेष रुप से पधार रहे है। इस अवसर पर वरिष्ठ व्यापारी अशोक छाबड़िया फर्म मे. मंगुमल वसुमल, मुन्नालाल बंसल फर्म मे. प्रांजल ट्रेडर्स का सम्मान किया जावेगा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील संस्था के सलाहकार संजय अग्रवाल, संस्था अध्यक्ष अजय रोहरा, अशोक जैन, जयप्रकाश राठी, रौनक अग्रवाल, राधारमण नागर, दीपक मेडतवाल, ऋषभ जैन, सूरज सामदानी, नवीन कांकरिया, शैलेन्द्र परमार, जवाहर सनमुखानी, मुकेश सोनगरा, अभय जैन, रवि नाटानी इत्यादी ने की है।

मेरा विद्यालय-मेरी अयोध्या श्रृंखला में भव्य राम-समर्पित कार्यक्रम

माकड़ोन। शिक्षा के साथ संस्कार के ध्येय को सार्थक करते हुए संस्कार एकेडमी हाई स्कूल, माकड़ोन में मेरा विद्यालय-मेरी अयोध्या श्रृंखला के तहत एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने भगवान श्रीराम को समर्पित एक से बढ़कर एक भजनों व नृत्य प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया। बच्चों ने मानव श्रृंखला बनाकर जय श्रीराम और शुभ दीपावली लिखा, वहीं भजनों—मेरी झोपड़ी के भाग आज खुल जाएंगे, केसरी के लाल, राम सिया की करुण कहानी, राम सिया राम पर दी गई प्रस्तुतियों ने माहौल को राममय कर दिया। कार्यक्रम का समापन लव-कुश द्वारा किए गए भावभीने अभिनय से हुआ, जिसे देखकर उपस्थित जनों की आंखें नम हो गईं। विद्यालय के डायरेक्टर नंदकिशोर शर्मा ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान श्रीराम ने अपने शत्रु रावण को भी क्षमा कर दिया, जिससे हमें दया, करुणा और क्षमा का अमूल्य संदेश मिलता है। उन्होंने कहा कि संयम और अनुशासन ही जीवन का आधार हैं, जिन्हें भगवान राम ने अपने आचरण से स्थापित किया। दूसरे डायरेक्टर श्री जुगल किशोर गामी ने कहा कि राम कथा हमें सिखाती है कि हमें अपने माता-पिता और गुरुजनों की भावनाओं का सदैव आदर करना चाहिए। रामायण से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि साहस और बुद्धि से हर कठिनाई पर विजय प्राप्त की जा सकती है। विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती कनुप्रिया जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान राम हर रिश्ते में अनुपम हैं-एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति और आदर्श राजा के रूप में। उन्होंने कहा कि राम राज्य आज भी आदर्श शासन की परिभाषा है, और रामायण हमें पारिवारिक जीवन के मूल मूल्य सिखाती है। कार्यक्रम में सभी शिक्षकों व स्टाफ सदस्यों का योगदान सराहनीय रहा। पूरे विद्यालय परिसर में भक्ति, अनुशासन और दीपोत्सव जैसी पवित्र भावना का माहौल छा गया। मेरा विद्यालय-मेरी अयोध्या श्रृंखला ने एक बार फिर साबित किया कि जब शिक्षा में संस्कार जुड़ जाते हैं, तो विद्यालय स्वयं एक अयोध्या बन जाता है।

एनएसएस ने रेड रन मैराथन में लहराया परचम, राष्ट्रीय स्तर पर करेंगे प्रतिनिधित्व

उज्जैन। मध्यप्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण समिति एवं राष्ट्रीय सेवा योजना, मध्यप्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय रेड रन मैराथन प्रतियोगिता में सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन परिक्षेत्र के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। युवाओं में एचआईवी/एड्स एवं स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से आयोजित इस महत्वपूर्ण मैराथन में उज्जैन परिक्षेत्र के छात्रों ने सक्रियता से भाग लिया और अपनी खेल प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रथम स्थान-मुकेश ने स्वर्ण पदक जीतते हुए शीर्ष स्थान प्राप्त किया। गर्ल्स वर्ग-द्वितीय स्थान-मेघा पंवार ने रजत पदक हासिल किया। तृतीय स्थान-साक्षी सूर्यवंशी ने कांस्य पदक जीतकर अपनी प्रतिभा सिद्ध की। विश्वविद्यालय की इस शानदार उपलब्धि पर कुलगुरु प्रो अर्पण भारद्वाज एवं कुलसचिव डॉ. अनिल कुमार शर्मा ने सभी विजेता विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं व्यक्त कीं। उन्होंने कहा कि यह प्रदर्शन राष्ट्रीय सेवा योजना के मूल उद्देश्यों और युवाओं के समर्पण को दर्शाता है। राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक डॉ. शेखर मैदमवार ने बताया कि इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के विजेता खिलाड़ी अब भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों के समूह सेवन सिस्टर्स में से एक, नागालैंड में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश राज्य का प्रतिनिधित्व करेंगे। दल प्रभारी के रूप में लोकमान्य तिलक महाविद्यालय उज्जैन की कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. स्मृति जैन ने स्वयंसेवकों का नेतृत्व किया। डॉ. मैदमवार कहा कि,यह जीत न केवल विश्वविद्यालय के लिए गर्व का विषय है, बल्कि यह भी स्थापित करती है कि राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक सामाजिक जागरूकता के साथ-साथ खेल के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने में सक्षम हैं।

दर्श अमावस्या, हंस महापुरुष, बुद्धादित्य, कलात्मक दुर्लभ योग में घर -घर होगा महालक्ष्मी का आगमन

▶ **मंगल, सूर्य और बुध सभी आपस में मिलेंगे, इसका संयुक्त प्रभाव सभी राशि के लोगों के लिए शुभफल देने वाला**

उज्जैन। 20 अक्टूबर सोमवार को दर्श अमावस्या, हंस महापुरुष, बुधादित्य योग और कलात्मक योग में दीपावली के दिन तीन ग्रहों के विशेष संयोग में घर घर महालक्ष्मी का आगमन होगा।

ज्योतिर्विद पं. अजय कृष्ण शंकर व्यास के अनुसार दीपावली का त्योहार 20 अक्टूबर सोमवार को मनाया जायेगा। दीपावली पर महालक्ष्मी पूजन अनुष्ठान प्रदोष काल संध्या एवं निशारात्रि में विधान है जो 20 अक्टूबर को 04.30 से होने से दर्श अमावस्या पुर्ण कहलाएंगी वहीं शास्त्र सम्मत है। मंगल, सूर्य और बुध सभी आपस में मिलेंगे। इसका संयुक्त प्रभाव सभी राशि के लोगों के लिए शुभफल देने वाला माना जा रहा है। कार्तिक अमावस्या को दीपावली पूजन स्थिर लग्न में करने का विधान है। अधिकतर लोग स्थिर लग्न में ही महालक्ष्मी का पूजन करते हैं। अमावस्या की रात जो भी स्थिर लग्न में महालक्ष्मी की पूजा करते हैं उनके घर में मां लक्ष्मी की स्थिरता बनी रहती है।

धनतेरस से होगी पांच दिनी दीपोत्सव की शुरूआत

ज्योतिर्विद पं अजय व्यास के अनुसार दीपावली (दीपोत्सव) पांच दिनों का पर्व माना जाता है। जिसकी शुरूआत धनतेरस होगी। धनत्रयोदशी 18 अक्टूबर शनिवार शाम 7:15 बजे से रात 8:19 बजे तक, छोटी दिवाली/नरक चतुर्दशी 19 अक्टूबर रविवार सुबह 7:47 बजे से दोपहर 12:26 बजे तक और रात 11.41 बजे से 12.31 बजे तक, दिवाली (लक्ष्मी पूजा) 20 अक्टूबर सोमवार को स्थिर लग्न 'वृषभ शाम 7:24 बजे से रात 9:24 बजे तक निशा रात्रि - 'सिंह लग्न 01.52 से 03.52 रहेगा। चौघड़िया, काल दीपावली के दिन यदि व्यापार खोलना हो, तो लाभ, शुभ, चर, अमृत आदि मुहूर्त (चौघड़िया) देखना शुभ माना जाता है। 20 अक्टूबर (सोमवार) चौघड़िया अनुसार अभिजित मुहूर्त दिन में 11:43 से 12:28 तक। चर 1:31 से 2:56, लाभ 2:56 से 4:21, अमृत 4:21 से 5:46, चल 5:46 से 7:21, लाभ मध्यरात्रि 10:31 से 12:06 बजे तक रहेगा। गोवर्धन पूजा / अन्नकूट 22 अक्टूबर बुधवार सुबह 6:26 बजे से 8:42 बजे तक, सांयकाल 3:29 बजे से 5:44, भाई दूज 23 अक्टूबर गुरुवार दोपहर 1:13 बजे से 3:28 बजे तक रहेगा। व्यापार-उद्योग में दीपावली के अवसर पर शुभ मुहूर्त चुनना खास महत्व रखता है। क्योंकि माना जाता है कि शुभ समय पर शुरू किया गया काम समृद्धि, सौभाग्य और सफलता की ओर ले जाता है।

महालक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए पूजन में चढ़ाएं विशेष वस्तुएँ

ज्योतिर्विद पं अजय व्यास के अनुसार महालक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए पूजा में कुछ विशेष वस्तुएं चढ़ाई जाती हैं जो देवी को अत्यंत प्रिय मानी जाती हैं। कमल का फूल (स्वजने) देवी लक्ष्मी का प्रिय फूल है। गुलाबी या लाल कमल सबसे शुभ माने जाते हैं। सफेद या पीले चावल, अक्षत (अटूट चावल) देवी को समर्पित किए जाते हैं। कुबेर मुद्रा या चांदी के सिक्के, धन की प्रतीक वस्तु के रूप में पूजा में रखी जाती हैं। गन्ना, नारियल, अनार, सेब और केला ये फल लक्ष्मी पूजन में शुभ माने जाते हैं। सिंदूर, हल्दी और कुमकुम देवी के श्रृंगार के लिए आवश्यक हैं। पान के पत्ते और सुपारी, पूजन की पूर्णता के लिए चढ़ाई जाती हैं। माखन, खीर या मालपुआ, भोग के रूप में अत्यंत शुभ माने जाते हैं। लाल वस्त्र या रेशमी साड़ी, देवी को लाल रंग अत्यंत प्रिय है। दीपक (घी का), पांच या ग्यारह बत्तियों का दीपक जलाना अत्यंत शुभ माना जाता

है। स्फटिक या गोमती चक्र, लक्ष्मी साधना में इनका विशेष महत्व होता है।

माता लक्ष्मी प्रदान करती हैं धन, समृद्धि और सौभाग्य

पं अजय व्यास ने बताया कि दीपावली महालक्ष्मी पूजन विशेषकर दीपावली या शुक्रवार को बहुत शुभ माना जाता है। सही विधि से पूजन करने पर माता लक्ष्मी प्रसन्न होकर धन, समृद्धि और सौभाग्य प्रदान करती हैं। महालक्ष्मी पूजन दीपावली की अमावस्या की रात्रि या शुक्रवार सर्वोत्तम मानी जाती है। पूजन आमतौर पर प्रदोष काल वृषभ लग्न सिंह लग्न या सूर्यास्त के बाद 5:30 बजे से 8:30 के बीच में किया जाता है। घर और पूजन स्थल की अच्छे से सफाई करें। उत्तर दिशा या पूर्व दिशा की ओर मुंह करके पूजन करें। चौकी पर लाल कपड़ा बिछाएं, उस पर श्री गणेश, लक्ष्मी और कुबेर जी की मूर्तियाँ या चित्र रखें। पूजन सामग्री में कलश (तांबे या मिट्टी का), जल, आम के पत्ते, नारियल, दीपक (घी का), अगरबत्ती, कपूर, फूल (विशेष रूप से कमल और गुलाब), चावल, रोली, हल्दी, कुमकुम, फल, मिठाई (खीर, माखन, लड्डू, मालपुआ), सिक्के, नोट, चांदी या सोने का आभूषण, लाल वस्त्र, पान, सुपारी रखें।

श्रीमहालक्ष्मी के समक्ष भक्ति, स्वच्छता और श्रद्धा सबसे महत्वपूर्ण

पं अजय व्यास ने बताया कि पूजन क्रम में सर्वप्रथम आसन ग्रहण और संकल्प करें। दाएं हाथ में जल लेकर मम परिवारस्य सुखसमृद्ध्यर्थं श्रीमहालक्ष्मी पूजनं करिष्ये। कहकर जल भूमि में छोड़ दें। गणेशजी की पूजा करें, बिना विघ्न के पूजन के लिए पहले श्री गणेश की आराधना करें। कलश में जल भरें, उसमें सुपारी, चावल, और सिक्का डालें। ऊपर आम के पत्ते रखकर नारियल स्थापित करें। महालक्ष्मी पूजन में देवी को स्नान (जल, दूध, पंचामृत से) कराएं। लाल वस्त्र पहनाएं। चावल, कुमकुम, फूल, और प्रसाद अर्पित करें, दीपक जलाएं। 108 बार मंत्र जाप करें, ? श्रीं ह्रीं क्लीं श्री सिद्ध लक्ष्म्यै नम:॥ कुबेर जी और धन की पूजा करें, धन (रुपये, नोट, तिजोरी, लेखा पुस्तिकाएं) के सामने दीपक जलाएँ। कुबेर जी का आह्वान करें कुबेराय नम:। जय लक्ष्मी माता आरती करें। कपूर जलाकर दीप आरती लें। प्रसाद वितरण और धन का पूजन करें। तिजोरी, व्यापार की पुस्तकों, और नकदी पर अक्षत और फूल चढ़ाएं, प्रसाद सभी को बाँटें। पूजा के समय मन शांत और प्रसन्न रखें, देवी के समक्ष भक्ति, स्वच्छता और श्रद्धा सबसे महत्वपूर्ण हैं।

पं अजय व्यास ने बताया कि अयोध्या में भगवान श्रीराम के 14 वर्ष के वनवास के बाद रावण पर विजय प्राप्त कर लौटने की खुशी में नगरवासियों ने दीप जलाए, तभी से दीपावली मनाई जाती है। दीपावली की रात्रि को धन, वैभव और समृद्धि की देवी महालक्ष्मी का पूजन किया जाता है। यह मान्यता है कि इस दिन वे घर-घर भ्रमण कर योग्य स्थानों पर स्थायी निवास करती हैं। कई पुराणों में दीपावली के दिन को लक्ष्मी-विष्णु विवाह दिवस भी कहा गया है। जैन धर्म में दीपावली के दिन भगवान महावीर ने निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त किया था। सिख धर्म में गुरु हरगोविंदजी की कारागार से मुक्ति का दिन भी दीपावली पर ही मनाया जाता है। दीपावली को नववर्ष का शुभारंभ भी माना जाता है विशेषकर गुजरात और मध्य भारत के व्यापारिक समुदायों में। इस दिन नई बहीखाता (खाता पूजन) करते हैं। इसे चोपड़ा पूजन कहा जाता है। यह समय नए कार्य, निवेश या व्यापार प्रारंभ करने के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। दीपक केवल बाहरी अंधकार को नहीं मिटाता यह हमारे भीतर की नकारात्मकता, अज्ञान और आलस्य दूर करने का प्रतीक है।

दीपावली (दिवाली) भारत का सबसे प्रमुख और पवित्र त्योहारों में से एक है। यह प्रकाश का अंधकार पर, सत्य का असत्य पर और ज्ञान का अज्ञान पर विजय का प्रतीक है। यह त्योहार हर धर्म, क्षेत्र और समाज में अलग-अलग रूपों में मनाया जाता है, पर इसका मूल भाव एक ही है, 'प्रकाश', समृद्धि और शुभता का स्वागत करना। स्थिर लग्न में पूजन से घर में मां लक्ष्मी का स्थाई वास होता है

हंस महापुरुष योग -इस दिन बृहस्पति देव अपनी उच्च की राशि कर्क में गोचर करके हंस नामक राजयोग का निर्माण कर रहे हैं। यह योग धन, सम्मान, ज्ञान और सफलता के लिए सबसे शुभ माना जाता है।

शनि वक्री योग (दुर्लभ संयोग)- न्याय के देवता शनि देव इस दिन वक्री चाल में मीन राशि में रहेंगे। ज्योतिर्विद पंडित व्यास के अनुसार, शनि की यह स्थिति कुछ राशियों के लिए धन लाभ और अप्रत्याशित सफलता के योग बनाती है।

कलात्मक योग-कन्या राशि में शुक्रऔर चंद्र की युति कलात्मक योग बना रही है। यह युति व्यक्ति को सुख-सुविधाएं, मानसिक शांति और रिश्तों में सद्भाव प्रदान करती है।

बुधादित्य योग-तुला राशि में सूर्य और बुध की युति से बुधादित्य योग बना है। यह राजयोग व्यक्ति को बुद्धि, नेतृत्व क्षमता, और सफलता प्रदान करता है।

श्री चिड़ार समाज का अन्नकूट महोत्सव 26 को

उज्जन। प्रातवषानुसार इस वर्ष भी श्री चिड़ार समाज का दीपावली मिलन समारोह एवं अन्नकूट महोत्सव 26 अक्टूबर रविवार को आयोजित किया जाएगा।

चामुंडा माता चौराहा स्थित सावन भादवा बिजासन माता मंदिर देवास गेट पर होने वाले समारोह में मां बिजासन को छप्पन भोग लगाकर महाआरती की जाएगी। साथ ही वर्ष 2024-25 में कक्षा 5वीं से 12वीं तक की परीक्षा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाली समाज की प्रतिभाओं का सम्मान भी किया जाएगा। इसके साथ ही 12वीं से स्नातकोत्तर की परीक्षा में भी 75 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाली प्रतिभाओं तथा अन्य क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को सम्मानित किया जाएगा। श्री चिड़ार समाज सास्कृतिक एव कल्याण सामात न समस्त समाजजनों से अनुरोध किया है कि वर्ष 2024-2025 की परीक्षा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले मेधावी छात्र-छात्राओं की अंकसूची की फोटो कॉपी समाज संरक्षक पुरषोत्तम मगरे, पूर्व अध्यक्ष भगवानदास ब्रामनिया, कार्यक्रम संयोजक मोहन चंदेल, धर्मेंद्र गोईया, कमलेश धंधेरे, सन्नी गोईया या आगर रोड़ कोयला फाटक स्थित महाकाल फोटो स्टूडियो पर 25 अक्टूबर की संध्या 7 बजे तक आवश्यक रूप से पहुंचा देवें। साथ ही समिति ने निवेदन किया है कि जो भी समाजजन माता को छप्पन भोग हेतु अपनी ओर से मिष्ठान या अन्य प्रकार का भोग अर्पित करना चाहें तो रविवार 26 अक्टूबर को सायं 5 बजे तक बिजासन माता मंदिर में पहुंचाए।

धनतेरस पर कुबेर और भगवान धन्वंतरि के पूजन से शुरू हुआ दीपोत्सव

▶ **कुलगुरु प्रो. अर्पण भारद्वाज और वित्त नियंत्रक तोमर ने किया पूजन**

उज्जैन। सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन में 18 अक्टूबर को, दीपावली के पंच दिवसीय महापर्व दीपोत्सव का विधिवत शुभारंभ किया गया। धनतेरस के अत्यंत शुभ अवसर पर यह शुरुआत धन के देवता भगवान कुबेर और स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद के देवता भगवान धन्वंतरी के वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पूजन-अर्चना से हुई। विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. अर्पण भारद्वाज और वित्त नियंत्रक जुवान सिंह तोमर ने भगवान कुबेर और भगवान धन्वंतरी के पूजन में संपूर्ण विश्वविद्यालय परिवार की समृद्धि, कल्याण और शैक्षणिक उत्थान के लिए पूजा-अर्चना कर उत्तरोत्तर प्रगति की कामना की।

विश्वविद्यालय के सहायक कुलसचिव (लेखा) अभिषेक मिश्रा ने बताया कि यह दीपोत्सव प्रति वर्ष की तरह इस बार भी विश्वविद्यालय के लेखा और वित्त विभाग के सभाकक्ष में प्रारंभ किया गया। सर्वप्रथम, विद्वान पंडित बद्रीलाल पाठक द्वारा शुभ मुहूर्त में दोनों विभागों के लिए कलश स्थापना की गई। इसके उपरांत महालक्ष्मी, भगवान कुबेर, भगवान धन्वंतरि, भगवान गणेश और भगवान विष्णु की मूर्ति स्थापना कर उनका आवाह्न किया गया। मुख्य पूजन भगवान कुबेर, जो धन-संपदा के संरक्षक हैं, और भगवान धन्वंतरि, जो आरोग्य के प्रदाता हैं, के रूप में प्रारंभ किया गया। इस पूजन प्रक्रिया में कुलगुरु प्रो. अर्पण भारद्वाज और वित्त नियंत्रक श्री जुवान सिंह तोमर ने विधि-विधान से कलश पूजन, आवाह्न, षोडशोपचार (सोलह प्रकार से पूजा) और श्री वृद्धि की कामना से विशेष अनुष्ठान पूर्ण किया। इस दौरान पूरे विश्वविद्यालय परिवार के लिए सुख, शांति और समृद्धि की प्रार्थना की गई। पूजन के पश्चात, कुलगुरु प्रो. अर्पण भारद्वाज ने सभी शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों को दीपावली पर्व की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि यह दीपावली पर्व सभी के जीवन में सुख, समृद्धि और खुशियों से परिपूर्ण हो और वर्षभर महालक्ष्मी का चिरस्थायी आशीर्वाद हम सब पर बना रहे। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अनिल कुमार शर्मा ने भी दीपोत्सव के इस पावन अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार को उन्नति और प्रगति प्रदान करने की कामना के साथ अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं। वित्त नियंत्रक तोमर ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा, हमारी यही कामना है कि यह दीपावली पर्व सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय परिवार को नई ऊंचाइयां प्रदान करे और निरंतर उन्नति एवं प्रगति के पथ पर अग्रसर रखे। पूजा अर्चना में डॉ. सुशील कुमार शर्मा, डॉ. रमन सोलंकी, डॉ. शेखर मैदामवार, डॉ. अजय शर्मा, डॉ. सर्वेश्वर शर्मा, डॉ. अनिल कुमार जैन, डॉ. महेंद्र पंड्या, दिनेश तायडे कैशियर, ओम जोशी, मनोहर सिंह बैंस, इकबाल हुसैन, राजेंद्र शर्मा, राजेंद्र झा, दुर्गा मकवाना, जानकी वर्मा, मनोज परमार, लोकेश सोलंकी, रमेश सूर्यवंशी, जानकी वर्मा, संध्या पाटिल, पंडित बद्रीलाल पाठक, किरण परमार, अशोक मालवीय, जुल्फिकार शामिल थे। इस अवसर पर शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों ने उपस्थित होकर पूजा में सहभागिता की।

एक नजर ▶ **सनातन धर्म के विपरित निर्णय देने वाले और कार्य करने वाले लोगों को रोकेंगे**

सनातन धर्म में आ रही विकृति को रोकने के लिए हुआ श्री महाकाल विद्वत परिषद का गठन

उज्जैन। वर्तमान में देश में सनातन धर्म की मान्यताओं, परंपराओं, वेदों और शास्त्रों में निहित बातों पर कई लोग अनर्गल टिप्पणी कर धर्म को अपने हिसाब से पेश करते हैं ऐसे लोगों के लिए धर्म त्योहार, उत्सव केवल मनोरंजन का साधन मात्रा है जिसके कारण धर्म की पवित्रता एवं मंदिरों की परंपरा प्रभावित होती हैं।

युवा ब्राह्मण समाज अध्यक्ष गोपाल पुजारी ने बताया कि चाणक्य पुरी स्थित श्री परशुराम मंदिर पर अखिल भारतीय पुजारी महासंघ, अखिल भारतीय युवा ब्राह्मण समाज और महाकाल सेना की संयुक्त बैठक कर संस्थापक अध्यक्ष महेश पुजारी की अध्यक्षता में विद्वत परिषद का गठन किया गया। ये विद्वत परिषद शास्त्र, वेद, पुराण, भाष्य एवं अन्य ग्रंथो में निहित प्रमाणित निर्णय सनातन धर्मावलंबियों को बताएगी। जिससे लोगों में फैले असमंजस को दूर किया जा सकेगा। विद्वत् परिषद में आचार्य पं. गोपाल शुक्ल (उज्जैन), आचार्य पं. आशीष अग्निहोत्री (उज्जैन), आचार्य पं. संजय शर्मा (दमन दीव), आचार्य पं. नरेंद्र त्रिपाठी (इंदौर), आचार्य पं. अभिषेक पण्डा (काशी), आचार्य पं. मनोज शास्त्री (उज्जैन) को सम्मिलित किया गया। विद्वत परिषद देश में एक सुचारू और धर्म अनुसार निर्णय देगी। जिसमें त्योहारों की असमानता में धर्म शास्त्र युक्त निर्णय देना, एक तिथि एक त्यौहार मनाना, गणेश विसर्जन ओर देवी विसर्जन में विकृति आ रही हैं समय पर विसर्जन नहीं होने से आयोजकों और भक्तों को जन, धन नुकसान हो रहा है ओर धर्म की हानि हो रही हैं। देश में

आए दिन सनातन धर्म पर कई लोग बयानबाजी करते हुए मंदिरों की परंपरा को धूमिल करते हैं, पिछले दिनों एक व्यक्ति ने महाकाल महाराज पर चढ़ने वाली भांग को शास्त्र विरुद्ध बताया था, पूर्व में भी नवरात्रि में होने वाली सरकारी पूजन में माताजी पर चढ़ने वाली मदिरा की को बंद करने की बात कही थी जिसका महाकाल सेना ने पुरजोर विरोध किया था जिसके फल स्वरूप नगर पूजा मदिरा के साथ हुई। ऐसे अन्य कई महत्वपूर्ण विषयों को लेकर चिंतन किया गया ओर निर्णय देने की बात कही।

बैठक में रावण दहन पर भी विस्तृत चर्चा हुई जिसमें उपस्थित सभी सदस्यों और ब्राह्मणों ने एक मत से रावण दहन का विरोध किया और रावण दहन बंद कराने का संकल्प लिया, जिसके तहत आगामी समय में काली पट्टी बांधकर विरोध करना, धरना प्रदर्शन, पुतले दहन ओर आवश्यकता पड़ी तो न्यायालय की शरण भी ली जाएगी। शीघ्र ही इन विषयों को लेकर देश के प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री को पत्र भेजकर धर्मानुसार, शास्त्रानुसार पक्ष बताते हुए रावण दहन बंद करने की मांग की जाएगी। इस अवसर पर मुख्य रूप से राकेश जोशी (राका गुरु), रूपेश मेहता, सुरेश शर्मा, महेंद्र सिंह बैंस, राहुल व्यास, राहुल जोशी, कन्हैया पहलवान, मनोहर भैया, घनश्याम दीक्षित, अमृतेश त्रिवेदी, राम शर्मा, आशीष ठक्कर, गोविंद व्यास, नंदन गुरु, चंद्रमोहन गुरु, अरुण गुरु, आदित्य गुरु, हिमांशु, सोनू, नारायण, भोजराज, अरुण, मनोज भैया, देवकीनंदन, चंद्र मोहन, अजय दुबे, विजय दुबे मुख्य रूप से उपस्थित थे।